वेदांतपर पदें

पद ४७

(राग: काफी - ताल: त्रिताल)

मन हे बहु अनिवार। काय करूं यासी न लागे थार।।ध्रु.।। व्यर्थचि जन्मुनि बहु श्रमतों परि। गुरु भजनीं अस्थिर मनोहर म्हणे श्रीमाणिक कृपेविण। न पावे हा निर्धार।।१।।